सादर प्रकाशनार्थ

चैतन्य दुर्गा मॉ का दरबार

कोरबा–09.10.2016–प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के द्वारा चैतन्य दुर्गा मॉ दरबार का आयोजन दिनांक 11 अक्टूबर तक किया गया है। यह झांकी कोरबा अंचल में निम्न स्थानों पर आयोजित की गई है। घंटाघर के समीप एम.पी.नगर कोरबा। 2. मध्य नगरी चौक कटघोरा। 3.राजयोग केन्द्र सेक्टर 6 बाल्को। नगरवासी झांकी का दर्शन लाभ लेने के लिये सादर आमंत्रित हैं।

शारदीय नवरात्र के आते ही जन मानस में उमंग उत्साह एवं उल्लास की लहर दौड़ जाती है। विभिन्न स्थानों पर बाजे गाजे एवं ढ़ोल नगाड़ों के साथ मॉ की प्रतिमायें विराजमान होते दिखाई देती हैं। जिसके कारण सारा वातावरण मॉ की दिव्य आभा की शक्ति से दैदीप्यमान होने लगता है। मॉ के विभिन्न स्वरूपों पूजा से तात्पर्य उनके द्वारा विभिन्न शक्तियों और गुणों का प्रतीक है। मॉ दुर्गा दुर्गणों को संहार करने का प्रतीक है, महिसासुर मर्दिनी जिसका तात्पर्य है कि आसुरी वृत्तियों का संहार कर मानव मं देवत्व को जगाने वाली मॉ, कलिकाल में मानव न चाहते हुए भी आसुरी वृत्तियों वा वातावरण के प्रभाव में आ जाता है। अधर्म की कालिमां व काल रात्रि में काली का विकराल रूप बुराईयों के संहार का प्रतीक है। जगत जननी मॉ जगदम्बा सभी की झोली वरदानों से भरपूर करने वाली है। इन सभी स्वरूपों को शिव ही शक्ति प्रदान करने वाले हैं। शिव के अवतरण को शिव रात्रि के नाम से जाना जाता है, वे भी धर्म ग्लानी के अर्थातृ कलिकाल के अंतिम समय में एक साधारण वृद्ध तन में परकाया प्रवेश करते हैं, जिसे पुरूषोत्तम संगम युग कहते हैं। शिव परमात्मा जब इस धरा पर आते हैं तो माताओं एवं कन्याओं के द्वारा ही आध्यात्मिक ज्ञान को जन–जन तक पहंचाने का कार्य करते हैं। यह ज्ञान–वीणा की झंकार करते सरस्वती के स्वरूप को दिखलाया गया है। जब एक साधारण मानव राजयोग की शिक्षा धारण कर अपनी बुराईयों पर विजय प्राप्त कर लेता है और शिव पिता की दिव्य स्मृति के द्वारा शक्तियों को धारण कर काम, कोध, लोभ, मोह, अहंकार के साथ ईर्ष्या, द्वेष, घृणा, आलस्य एवं भय के दस शीश वाले रावण को मार कर, ईश्वरीय बुद्धि से गधे का सिर भी उतार देना ही सच्चा–सच्चा दशहरा व विजयादशमी मनाना है। इसके साथ ही कलियुग के बाद सतयुग के आगमन अर्थात् सतयुग है ही, स्वर्णिम भारत का प्रतीक जहां सर्व सम्पन्नता और समृद्धि के साथ श्री लक्ष्मी नारायण का एक धर्म,एक राज्य, एक भाषा और एक मत वाला सुख, शांति एवं खुशियों से भरपूर राज्य होगा।

दुर्गा, काली, लक्ष्मी का यह भारत देश, सुन लो आत्माओं शिव का संदेश।

मानवता की सेवा में, ब्रह्माकुमारी रूकमणी